३. प्रवेश (प्रवेशिका पूर्ण) (तृतिय वर्ष) – कथक

कुल अंक :– २०० क्रियात्मक :– १५० मौखिक शास्त्र :– ५०

* **क्रियात्मक :**

१. शुद्ध नृत पक्ष	– १००
२. अभिनय पक्ष	– २५
३. अंग शुद्धि	– ५
४. वेशभूषा	– ५
५. प्रस्तुति प्रभाव	– १५
६. मौखिक शास्त्र	– ५० (पढन्त एवं मुद्रा सहित)

नोंध : (१) गत वर्षो के अभ्यासक्रम में से भी पूछा जा सकता है ।
(२) तबले एवं लहरे की संगति आवश्यक ।
(३) सभी रचनाओं की पढन्त अनिवार्य ।

क्रियात्मक

* त्रिताल

१. ठाट	– दो मुखडे सहित
२. परनजुडी आमद	– १
३. तोडे	– ३
४. चक्रदार तोडे	– २
५. परन	– २
६. चक्रदार परन	– २
७. कवित / कविता	– १
८. गतनिकास	– मोरमुकुट, मटकी
९. लयकारी	– त्रिताल में आधी–बराबर, दुगुन, चौगुन, आठ गुन तिहाई सहित ।
१०. बाँट / पलटे	– ४ प्रकार तिहाई सहित ।

११. दादरा एवं कहरवाताल – लयकारी – ठाह एवं दुगुन (गिनती, ठेका, नृत्य के बोल)

* अभिनय
१. श्लोक – गणेश वंदना,
२. गतभावः – माखनचोरी

* झपताल

१. लयकारी	– बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित
२. आमद	– १
३. तोडे	– ३
४. परन	– १

* असंयुकत हस्त मुद्राए – (अभिनय दर्पण के अनुसार)
सिर्फ करके दिखाना और उनके २ – २ प्रयोग बताना है ।

पद्मकोष, सर्पशीर्ष, मृगशीर्ष, सिंहमुख, काँगुल, अल्पद्म, चतुर, भ्रमर, हंसास्य, हंसपक्ष, संदंश, मुकुल, ताम्रचूड, त्रिशूल, अर्धसूचि, व्याघ्र, पल्ली ।

मौखिक शास्त्र

१. कथक नृत्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दीजिए ।

(१) उत्पत्ति (२) मुगलकाल के दौरान कथक नृत्यमें होनेवाले परिवर्तन ।

२. कथक नृत्यका परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दिजीए ।

(१) तीनो घरानों की संक्षिप्त जानकारी ।

(२) रंगमंच पर कथक नृत्यकी प्रस्तुति क्रम अनुसार (केवल नाम)

(३) संगति में लिए जाने वाले वाद्य एवं संगीत पद्धति तथा भाषा ।

३. परभाषाएँ : ठाट, परन, चक्रदारपरन, गतभाव, हस्तमुद्रा, लहरा, ठेका, परनजुडीआमद ।

४. वर्तमान कथक गुरुओं के नाम कोइ भी पाँच ।

५. गत वर्षो के अभ्यासक्रम में से भी पूछा जा सकता है ।